3

शिक्षा के लिए मेरा संघर्ष

प्रस्तुत पाठ के लेखक ब्रूकर-टी वाशिंगटन पढ़ाई के प्रति बहुत जागरूक रहे थे। वे अपनी शिक्षा किसी श्रेष्ठ विद्यालय से प्राप्त करना चाहते थे। लेकिन उनके घर की आर्थिक स्थिति बहुत शोचनीय थी। ऐसी परिस्थितियों में भी लेखक ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो कष्ट उठाए हैं, उनका वर्णन इस पाठ में किया गया है।

एक दिन जब मैं कोयले की खान में काम कर रहा था, तब मुझे खान में काम करने वाले दो मज़दूरों की बातों को छिपकर सुनने का मौका मिला, जो वर्जीनिया के किसी स्थान पर नीग्रो के एक बड़े स्कूल के विषय में बातें कर रहे थे। यह पहला अवसर था, जब मैंने किसी ऐसे स्कूल या कॉलेज के विषय में सुना था, जो हमारे नगर के नीग्रो के छोटे स्कूल से कहीं अधिक आकर्षक था।

जब वे स्कूल का वर्णन कर रहे थे, तब मुझे ऐसा लगा कि यह पृथ्वी का सबसे महान स्थान होगा। उस समय मुझे स्वर्ग में इतने आकर्षण प्रतीत नहीं हुए जितने कि वर्जीनिया के उस हैम्पटन नॉर्मल एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूट में हुए, जिसके विषय में ये व्यक्ति बातें कर रहे थे। मैंने तुरंत उस स्कूल में जाने का निश्चय किया, यद्यपि मुझे यह भी पता नहीं था कि यह कहाँ और कितने मील दूर है या मैं वहाँ कैसे पहुँचूँ। लगातार मुझे एक ही अभिलाषा प्रेरित कर रही थी कि मैं हैम्पटन में जाऊँ। दिन-रात यह विचार मेरे मन में रहा।

1872 ई० के पतझड़ के मौसम में मैंने वहाँ जाने का निश्चय किया। मेरी माताजी इस बात से दु:खी थीं कि मैं एक ऐसे कार्य को करने जा रहा हूँ जो असंभव है। कुछ भी हो बेमन से मेरी माँ ने मुझे जाने की स्वीकृति दे दी। मेरे पास बहुत थोड़ा धन था, जिससे मैं कपड़े खरीदूँ और यात्रा के लिए व्यय करूँ। मेरे भाई जॉन ने जितनी सहायता वह कर सकता था की, किंतु वास्तव में वह काफ़ी नहीं थी।

आखिरकार वह महान दिन आ गया और मैं हैम्पटन के लिए चल पड़ा। मेरे पास एक छोटा सस्ता थैला था जिसमें कुछ कपड़े थे, जो मैं प्राप्त कर सका। उस समय मेरी माताजी बीमार और कमज़ोर थीं। मुझे यह आशा नहीं थी कि मैं पुन: उनसे मिल पाऊँगा और इसलिए हमारा वियोग दु:खदाई था, किंतु फिर भी वह पूरे समय बहादुर बनी रहीं।

माल्देन से हैम्पटन की दूरी लगभग पाँच सौ मील है। कभी पैदल चलकर, कभी घोड़ा–गाड़ी या कारों से लिफ़्ट लेकर किसी प्रकार कई दिनों के बाद मैं वर्जीनिया के नगर रिचमांड पहुँचा, जो हैम्पटन से लगभग 82 मील दूर है। जब मैं वहाँ पहुँचा, तब बहुत थका हुआ, भूखा और मैला–कुचैला था और रात काफ़ी बीत चुकी थी।

इससे पहले मैं इतने बड़े शहर में कभी नहीं गया था, इस कारण मेरी परेशानी और बढ़ गई। जब मैं रिचमांड पहुँचा, तब मेरे पास बिल्कुल धन नहीं था। उस स्थान पर मेरी जान–पहचान का एक भी व्यक्ति नहीं था और नगर के रास्तों से अनभिज्ञ होने के कारण मैं नहीं जान सका कि कहाँ जाऊँ। कई लोगों से मैंने रहने के स्थान के विषय में पूछा, लेकिन वे सब पैसा चाहते थे, जो मेरे पास नहीं था और अधिक अच्छी बात समझ में न आने के कारण मैं सड़कों पर घूमता रहा।

मैं आधी रात के बाद तक सड़कों पर चक्कर काटता रहा। अंत में मैं इतना थक गया था कि और अधिक नहीं चल सकता था। मैं थका हुआ था, भूखा था, और भी कुछ, किंतु हतोत्साहित नहीं था। जब मैं शारीरिक रूप से अत्यधिक थक गया था, तब मैं सड़क के एक ऐसे किनारे पर आ गया जहाँ फुटपाथ का चबूतरा कुछ उठा हुआ था। कुछ क्षण मैंने प्रतीक्षा की, जब तक मुझे यह विश्वास नहीं हो गया कि इधर से जाने वाला कोई व्यक्ति मुझे देखेगा नहीं, तब मैं रेंगकर चबूतरे के नीचे पहुँच गया और रात बिताने के लिए धरती पर लेट गया तथा कपड़ों के थैले को तकिये के स्थान पर लगा लिया। लगभग पूरी रात मैंने ऐसा सुना, मानो राह चलने वालों के पैर मेरे सिर पर पड़ रहे हों।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने स्वयं को कुछ तरोताज़ा पाया, किंतु मैं भूखा था। ज्यों ही इतना प्रकाश हो गया कि मैं अपने चारों ओर की वस्तुएँ देख सकूँ, मैंने देखा कि पास में एक बड़ा जहाज़ था। ऐसा लगा कि इसमें से कच्चा लोहा उतारा जा रहा था। मैं तुरंत जहाज़ के पास गया और मैंने जहाज़ के कप्तान से प्रार्थना की कि वह मुझे जहाज़ से सामान उतारने में सहायता करने की स्वीकृति दे दे ताकि मैं भोजन के लिए कुछ धन प्राप्त कर सकूँ। कप्तान, जो एक अंग्रेज़ था और सहृदय व्यक्ति मालूम पड़ता था, सहमत हो गया। अपने नाश्ते के लिए धन कमाने हेतु मैंने काफ़ी समय तक कार्य किया और जैसा कि मुझे अब भी याद है, ऐसा मालूम पड़ता है कि मैंने इससे अच्छा नाश्ता पहले कभी नहीं खाया था।

मेरे कार्य ने कप्तान को इतना प्रसन्न कर दिया कि उसने मुझे कहा कि मैं थोड़ी मज़दूरी प्रतिदिन करता रहूँ। ऐसा करने के लिए मैं बहुत प्रसन्न था। मैंने कई दिनों तक इस जहाज़ पर कार्य किया। अपनी थोड़ी–सी मज़दूरी से भोजन खरीदने के बाद मेरे पास हैम्पटन जाने के लिए अधिक पैसे नहीं बचते थे। हर प्रकार से बचत करने के लिए मैंने चबूतरों पर सोना जारी रखा।

जब हैम्पटन पहुँचने के लिए मैंने काफ़ी धन बचा लिया तो जहाज़ के कप्तान को उसकी दया के लिए धन्यवाद दिया और फिर चल पड़ा। बिना किसी असाधारण घटना के मैं हैम्पटन पहुँच गया। मेरे पास अपनी शिक्षा आरंभ करने के लिए पूरे पचास सैंट फालतू थे। इस बड़ी तीन मंज़िल की ईंटों की बनी हुई इमारत पर पहली दृष्टि पड़ते ही मुझे ऐसा लगा कि इस स्थान तक पहुँचने में जो परेशानियाँ उठानी पड़ीं, उन सभी का मुझे इनाम मिल गया है। इस भवन के दृश्य ने मुझे नया जीवन प्रदान किया।

हैम्पटन स्कूल के प्रांगण में पहुँचने के तुरंत बाद कक्षा में प्रवेश के लिए, कोई कार्य प्राप्त करने के लिए मैं मुख्य अध्यापिका के समक्ष प्रस्तुत हुआ। इतने समय तक बिना भोजन, स्नान और कपड़े न बदलने के कारण वास्तव में मैं उन पर अनुकूल प्रभाव नहीं डाल सका। मैंने तुरंत पहचान लिया कि उनके मस्तिष्क में मुझे प्रवेश देने के लिए संदेह था। कुछ समय तक उन्होंने मुझे प्रवेश देने के लिए न तो मना ही किया और न ही मेरे पक्ष में कोई निर्णय लिया। मैं उनके पीछे-पीछे फिरता रहा और अपनी योग्यता के अनुसार हर प्रकार से उन्हें प्रभावित करता रहा। इसी बीच मैंने उन्हें अन्य विद्यार्थियों को प्रवेश देते हुए देखा और इससे मेरी परेशानी और बढ़ गई। मेरे हृदय में तीव्र इच्छा थी कि मुझे भी यदि अपनी योग्यता दिखाने का एक अवसर मिल जाए तो मैं भी उन विद्यार्थियों के समान ही अच्छा कार्य करके दिखा सकता हूँ।

कुछ घंटे गुज़रने के बाद मुख्य अध्यापिका ने मुझसे कहा, "बगल के संगीत के कमरे में सफ़ाई की आवश्यकता है। झाड़ू लो और इसे साफ़ करो।"

मुझे ऐसा लगा मानो अब मुझे अवसर मिल गया है। मैंने किसी आदेश को पहले कभी इतनी प्रसन्नता से स्वीकार नहीं किया था।

मैंने संगीत कक्ष में तीन बार झाड़ू लगाई, फिर मैंने झाड़ने का कपड़ा उठाया और चार बार पोंछा लगाया। दीवारों पर लगा लकड़ी का सामान, प्रत्येक बैंच, मेज़, डेस्क सभी को चार बार झाड़न से साफ़ किया। प्रत्येक फर्नीचर को हटाया और कमरे की सभी अलमारियों तथा कोनों को पूर्ण रूप से साफ़ किया। मेरा यह विचार था कि काफ़ी हद तक मेरा भविष्य उस प्रभाव पर निर्भर करता है जो कमरे को साफ़ करके अपनी अध्यापिका पर छोड़ूँगा। जब मैंने अपना कार्य पूरा कर लिया, तब मैंने मुख्य अध्यापिका को बताया। वह अमेरिका के उत्तरी राज्यों में रहने वाली एक महिला थी, जो जानती थी कि धूल कहाँ हो सकती है। वह कमरे में गईं और फ़र्श तथा अलमारियों का निरीक्षण किया। फिर उसने रूमाल निकाला और दीवारों के लकड़ी के काम पर, मेज़ तथा बैंचों पर इसे रगड़ा। जब उसे फ़र्श या किसी फर्नीचर पर धूल का एक कण भी नहीं मिला, तब उसने धीरे से कहा, "मेरा विचार है कि तुम्हें भी इस विद्यालय में प्रवेश मिलना चाहिए।"

उस समय मैं इस पृथ्वी पर सबसे प्रसन्न व्यक्तियों में से एक था। कमरे की झाड़ू मेरी विद्यालय की परीक्षा थी। तब से मैंने अनेक परीक्षाएँ पास की हैं, किंतु मैंने सदा यह अनुभव किया कि यह सर्वोत्तम परीक्षा थी, जो मैंने पास की।

शिक्षा शिक्षा प्राप्त करना हमारा पहला कर्त्तव्य है।

शब्द-पोटली

अभिलाषा – इच्छा। प्रेरित – उत्साहित। स्वीकृति – अनुमति। वियोग – विछोह, अलगाव। अनभिज्ञ – अपरिचित। हतोत्साहित – निराश, जिसका उत्साह मर चुका हो। सहृदय – दयालु।

अभ्यास

संकलित मूल्यांकन

पाठ बोध

(क) सही विकल्प पर ✓ लगाइए:

1. लेखक काम कर रहा था–
   खेत में ☐ घर में ☐ विद्यालय में ☐ कोयले की खान में ☐
2. खान में काम करने वाले कहाँ के स्कूल के बारे में बात कर रहे थे?
   भारत के ☐ टोकियो के ☐ वर्जीनिया के ☐ लंदन के ☐
3. किस मौसम में लेखक ने वर्जीनिया जाने का निश्चय किया?
   शीत ऋतु में ☐ पतझड़ में ☐ वसंत में ☐ वर्षा ऋतु में ☐
4. मालदेन से हैम्पटन की दूरी है–
   500 मील ☐ 5000 मील ☐ 50 मील ☐ 500 मीटर ☐
5. रिचमांड से हैम्पटन की दूरी है–
   82 मील ☐ 100 मील ☐ 500 मील ☐ 820 मील ☐
6. लेखक ने संगीत कक्ष में झाड़ू लगाई–
   दो बार ☐ तीन बार ☐ चार बार ☐ आठ बार ☐
7. लेखक ने संगीत कक्ष में पोंछा लगाया–
   दो बार ☐ तीन बार ☐ चार बार ☐ दस बार ☐

(ख) नीचे दिए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए:

झाड़ू, माताजी, प्रवेश, विद्यालय, सड़कों

1. मैंने तुरंत उस _____ में जाने का निश्चय किया।
2. मेरी _____ इस बात से दुःखी थीं।
3. मैं आधी रात के बाद तक _____ पर चक्कर काटता रहा।
4. इसी बीच मैंने उन्हें अन्य विद्यार्थियों को _____ देते हुए देखा।
5. कमरे की _____ मेरी विद्यालय की परीक्षा थी।

(ग) सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य कथन पर ✗ लगाइए:

1. लेखक पढ़ना नहीं चाहता था, उसे तो विद्यालय देखने की इच्छा थी। ☐
2. लेखक के भाई ने उसकी पूरी सहायता की। ☐
3. रिचमांड में लेखक के बहुत-से रिश्तेदार रहते थे। ☐
4. लेखक ने हैम्पटन पहुँचने के लिए जहाज़ पर मज़दूरी की। ☐
5. लेखक ने वर्जीनिया के स्कूल में प्रवेश प्राप्त कर लिया। ☐

(घ) निम्नलिखित को सुमेल कीजिए:

(अ)	(ब)
1. नीग्रो	(a) 82 मील
2. पतझड़	(b) तीन बार झाड़ू
3. मालदेन से हैम्पटन	(c) बड़ा स्कूल
4. रिचमांड से हैम्पटन	(d) मौसम
5. संगीत कक्ष	(e) 500 मील

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. हैम्पटन जाने के लिए लेखक के सामने क्या-क्या समस्याएँ थीं?
2. लेखक जब रिचमांड पहुँचा तब कैसा अनुभव कर रहा था और वह आधी रात तक सड़कों पर क्यों घूमता रहा?
3. लेखक ने हैम्पटन पहुँचने के लिए धन की व्यवस्था किस प्रकार की?
4. हैम्पटन का स्कूल देखकर लेखक को कैसा लगा?
5. लेखक ने संगीत कक्ष की सफ़ाई किस प्रकार की? मुख्य अध्यापिका ने संगीत कक्ष की सफ़ाई का निरीक्षण करके लेखक से क्या कहा?

भाषा बोध

(च) निम्नलिखित के विलोमार्थी शब्द लिखिए:

1.	बड़ा ×	_____	2.	पहला ×	_____
3.	स्वर्ग ×	_____	4.	पतझड़ ×	_____
5.	दूर ×	_____	6.	शहर ×	_____
7.	समान ×	_____	8.	भविष्य ×	_____
9.	उत्तरी ×	_____	10.	प्रवेश ×	_____

(छ) निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए:

1. परिचित _____
2. इच्छा _____
3. धन _____
4. निर्णय _____
5. सर्वोत्तम _____
6. निरीक्षण _____

रचनात्मक मूल्यांकन

मौखिक अभ्यास

- निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए तथा लिखिए:

नीग्रो	स्वर्ग	अभिलाषा	तरोताज़ा	भविष्य
_____	_____	_____	_____	_____

क्रियात्मक कार्य

- आप आगे की पढ़ाई के लिए क्या सोच रहे हैं? कैसे विद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं और क्या पढ़ना चाहते हैं? इस विषय में अपनी योजना एवं घरेलू स्थिति का विवरण अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

परिचर्चा

- आपने अपने नगर या गाँव में किसी विद्यार्थी को अच्छी शिक्षा पाने के लिए बड़ी कठिनाइयों का सामना करते देखा होगा। उस विद्यार्थी की कठिनाइयों की कक्षा में चर्चा कीजिए तथा उसकी सहायता कीजिए।

उच्च बौद्धिक स्तरीय प्रश्न (HOTS)

- जिस प्रकार लेखक को हैम्पटन जाने के लिए उचित धन नहीं मिला, उसी प्रकार यदि लेखक के स्थान पर आप होते तो क्या करते?

मूल्यपरक प्रश्न (VBQ)

- अच्छे विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आप क्या कर सकते हैं?